

डॉ. लेस्ली एलन, विलापगीत, सत्र 13, विलापगीत 5: 8-16

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 13, विलाप 5:8-16 है।

हमारे पिछले वीडियो में, हमने विलाप अध्याय 5 से शुरुआत की थी, और हमने देखा कि यह पुस्तक का चरमोत्कर्ष था, दुःख की उस प्रार्थना का चरमोत्कर्ष, और कैसे, आखिरकार, समुदाय ने गुरु और उस रोल मॉडल, सिथ्योन दोनों के आग्रह के जवाब में प्रतिक्रिया व्यक्त की।

गुरु ने सबसे पहले सिथ्योन से प्रार्थना करने का आग्रह किया, और फिर सिथ्योन ने न केवल अपने लिए बल्कि मण्डली की ओर से भी प्रार्थना की। गुरु ने अध्याय 3 में दो बार प्रार्थना भी की। उन्होंने उसे पिछली प्रार्थनाएँ बताईं और समुदाय को स्पष्ट निर्देश दिया कि प्रार्थना करने की बारी उनकी है। हमें लंबे समय तक इंतजार करना पड़ा, लेकिन आखिरकार, प्रतिक्रिया आती है, और मण्डली अपनी प्रार्थना लेकर आती है।

उन्होंने बहुत कुछ सीखा है और वे अपने गुरु और ज्ञायन द्वारा कही गई बातों को बहुत कुछ आत्मसात करते हैं। और हम एक निर्णायक मोड़ पर पहुँचते हैं, दुःख की बात है कि हम सोच सकते हैं कि समापन पर नहीं, लेकिन कभी-कभी समापन में बहुत अधिक समय लगता है। लेकिन यहाँ एक निर्णायक मोड़ है, और हालाँकि वे पहले की तरह ही बहुत दर्द में हैं, वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक रूप से वे बहुत दुःख महसूस करते हैं, और फिर भी वे आगे की ओर देख सकते हैं।

और यह आगे की ओर देखना उनकी भावना से व्यक्त होता है कि वे स्वयं ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं, एक ऐसी प्रार्थना जिससे चीजें बेहतर के लिए बदल सकें। हम पद 1 से 7 को देख रहे थे और कह रहे थे कि यह इस प्रार्थना का पहला भाग है, और हमने उस पहले पद में मदद के लिए पुकार देखी, और हमने दुःख और वास्तव में शिकायत की अभिव्यक्ति का एक लंबा भाग देखा, स्वतंत्रता के नुकसान पर, जिसका वे अतीत में आदी थे और जिसे वे सामान्य मानते थे, लेकिन अब वे एक कब्जे वाले देश में रह रहे थे। और यह युद्ध के बाद की स्थिति है जो इस प्रार्थना के माध्यम से उनके दिमाग को बहुत अधिक प्रभावित करती है, बजाय इसके कि वे पीछे मुड़कर देखें कि पहले क्या हुआ था, बेबीलोनियों के आक्रमण में, और 18 लंबे महीनों तक यरूशलेम की घेराबंदी में, और फिर यरूशलेम पर कब्जा कर लिया गया था।

हमने तय किया कि श्लोक 1 से 7 पहला खंड है क्योंकि उस अंतिम श्लोक में पाप का उल्लेख है, और हमने कहा कि हम श्लोक 16 में एक समानांतर खोजने जा रहे हैं। लेकिन यह समान नहीं है, क्योंकि श्लोक 7 में, यह पूर्वजों के पाप को देख रहा है; श्लोक 16 में, यह हमारे अपने पाप होंगे जो ध्यान का केंद्र होंगे। हमने कहा कि कुछ टिप्पणीकारों के बीच एक विरोधाभास और वास्तव

में एक विरोधाभास देखने की एक दुखद प्रवृत्ति है, कि कभी एक बात कही जाती है और कभी बिल्कुल दूसरी बात कही जाती है, और हम यह कहने की कोशिश कर रहे थे कि ऐसा नहीं है।

लेकिन विरोधाभास के लिए जो तर्क हमने देखा वह यहजेकेल 18 :2 पर आधारित था, उन बेबीलोन के निर्वासितों की नाराज़गी। हमारे पूर्वजों ने पाप किया, और फिर भी हम उनकी सज़ा भुगत रहे हैं। और सतही तौर पर, यह कुछ हद तक ऐसा ही लगता है।

लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है। यहाँ जो रेखा ली गई है, जो पिछली पीढ़ियों में पिछले पाप और वर्तमान पीढ़ी में वर्तमान पाप दोनों को देखती है, यह जोशुआ से लेकर राजाओं तक के उस महाकाव्य इतिहास के अनुरूप है, जिसमें पाप करने का एक लंबा इतिहास है, जो दुखद रूप से उत्तरी साम्राज्य के अंत और फिर दक्षिणी साम्राज्य के अंत तक ले गया। लेकिन इसके साथ ही, ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि अंतिम पीढ़ी संत थी और अपने पूर्ववर्तियों से काफी अलग थी।

नहीं, वे भी उतने ही पापी थे। हमने भजन संहिता में एक श्लोक देखा जिसमें वर्तमान पीढ़ी के पापों और पिछली पीढ़ियों के पापों के इन दो विचारों को मिलाया गया था। और यही हमने श्लोक 6 और 7 में देखा।

और अब मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं जो कह रहा था, उसे भजन संहिता की एक और आयत के साथ और स्पष्ट करना चाहता हूँ। और यह भजन संहिता 106 में है, और यह आयत 6 में है। तो, हम बस उस पर एक नज़र डालेंगे। और वह क्या कहता है? भजन संहिता 106 और आयत 6। हम और हमारे पूर्वजों ने पाप किया है।

हमने अधर्म किया है। हमने दुष्टता की है। और इसलिए, अतीत के पाप हैं, और वर्तमान पाप एक ही श्लोक में समाहित हैं।

जबकि यहाँ विलापगीत 7 और 16 में, यह दो आयतों में फैला हुआ है। और इसलिए, आगे बढ़ने से पहले मुझे यह स्पष्ट करना था। अब हम इस प्रार्थना के दूसरे भाग, आयत 8 से 16 की ओर बढ़ते हैं।

यह दो भागों में विभाजित है - सामान्य उत्पीड़न जिसे समग्र रूप से लोगों ने झेला था, विशेष उत्पीड़न जिसे लोगों के विभिन्न समूहों ने झेला था, तथा सामान्य दुःख की अभिव्यक्ति।

अंत में, वर्तमान पीढ़ी के संबंध में एक स्वीकारोक्ति, जो उस अंतर-पीढ़ीगत स्वीकारोक्ति के बाद मेल खाती है और समानांतर है और आवश्यक है जिसे हमने पद 6 और 7 में देखा था। और बहुत हद तक, हमारे पास हमारे तीन मार्ग हैं, हमारे तीन प्रक्षेप पथ हैं शिकायत के, हाँ, और फिर शोक, हाँ, और फिर अंत में, पद 16 में, अपराधबोध। और यह सब, निश्चित रूप से, पद 1 में उस अपमान, उस व्यक्तिपरक भावना, इस अपमान, इस द्वितीयक पीड़ा को स्पष्ट करना जारी रखता है जो वस्तुनिष्ठ पीड़ा के साथ आती और जाती है। और सामान्य इरादा अभी भी ईश्वर की करुणा को प्राप्त करना है।

और यह सब उस अपील को वापस देख रहा है। याद रखें, श्लोक 1, अनदेखा न करें। देखो और हमारी बदनामी देखो।

ये श्लोक उस अपमान को परिभाषित करने और ईश्वर की करुणा को आकर्षित करने में एक प्रेरक भूमिका निभाते हैं। और मोटे तौर पर, हमारे पास उत्पीड़न है। इस खंड का अधिकांश हिस्सा शिकायत के उत्पीड़न से भरा हुआ है, वह शिकायत जो उत्पीड़न से जुड़ी हुई है।

और हमने पिछली बार कुल मिलाकर देखा कि यह शैली एक अंतिम संस्कार विलाप की है, लेकिन एक अजीब अंतिम संस्कार विलाप जो पद 1 की उस प्रत्यक्ष प्रार्थना के बाद भगवान को संबोधित है। और इसलिए, पद 8 में, हमें यह शिकायत मिलती है। गुलाम हम पर शासन करते हैं। हमें उनके हाथ से छुड़ाने वाला कोई नहीं है।

और यह एक कब्ज़ा किया हुआ देश है। और यहाँ लोग, विदेशी, विदेशी सैनिक और प्रशासक थे, जो कमांड की श्रृंखला में निचले पायदान पर थे, लेकिन उनके पास ऐसे आदेश देने की शक्ति थी जिनका पालन किया जाना ज़रूरी था। और इन छोटे अधिकारियों को तिरस्कारपूर्वक गुलाम कहा जाता है।

और आधिकारिक शिकायत दर्ज करने का कोई अवसर नहीं है क्योंकि वे अधिकारी हैं। और शिकायत करने से उन्हें कुछ नहीं मिलेगा। सांस्कृतिक रूप से, यह उचित सामाजिक व्यवस्था का उलटा है, जिसे हम पुराने नियम में कई अंशों में पाते हैं।

उदाहरण के लिए, नीतिवचन अध्याय 30 और आयत 21 से 23 में लिखा है, "तीन बातों के कारण पृथ्वी कांपती है, और चार के कारण वह सह नहीं पाती। दास जब राजा बन जाता है, मूर्ख जब पेट भर जाता है, अप्रिय स्त्री जब पति पा लेती है, और दासी जब अपनी स्वामिनी का स्थान ले लेती है।"

इनमें से दो मामलों में, हमारे पास यहाँ की स्थिति के समानांतर एक तरह की स्थिति है: एक गुलाम जब राजा बनता है और एक दासी जब वह अपनी मालकिन की जगह लेती है। और जब भी ऐसा होता है, तो क्षितिज पर संकट आता है, नीतिवचन अध्याय 30 शिकायत करता है।

और फिर हमें यशायाह अध्याय 3 और श्लोक 4 में एक भविष्यवाणी पाठ में भी यह मिलता है। सजा की धमकी है और यशायाह 3-4 में उस धमकी का एक हिस्सा है, मैं लड़कों को उनका राजकुमार बनाऊंगा और बच्चे उन पर शासन करेंगे। ओह माय, यह कितना बुरा शासन साबित होने वाला है। लेकिन यह सामान्य सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक भेदभाव को उखाड़ फेंकना है जो अब लागू नहीं है।

हम इसे सभोपदेशक अध्याय 10 और श्लोक 16 में भी पाते हैं। सभोपदेशक 10-16. हे देश, तुम्हारे लिए हाय, जब तुम्हारा राजा एक सेवक है।

जब तुम्हारा राजा नौकर हो, या फिर बच्चा हो, वही हिब्रू शब्द, यह किसी भी तरह से हो सकता है। हे देश, तुम्हारे लिए अफसोस, जब तुम्हारा राजा नौकर हो या बच्चा हो। और इस्राएली संस्कृति में, बहुत अधिक वर्ग भेद था।

और इस बात को लेकर बहुत ज़्यादा भावना थी कि क्या उचित है और क्या अनुचित। और इसलिए यहाँ एक अनुचित स्थिति थी जिससे लोग पीड़ित थे। गुलाम हम पर राज करते हैं; हमें उनके हाथों से छुड़ाने वाला कोई नहीं है।

और फिर श्लोक 9, एक और समस्या जिसका सामना पूरा समुदाय कर रहा है। इस भाग में हम और हमारे हैं, और हम इस पर चर्चा करते हैं। और इसलिए, हम जंगल में तलवार के कारण अपने जीवन को खतरे में डालकर अपनी रोटी प्राप्त करते हैं।

तलवार क्या है? जंगल में तलवार। मुझे लगता है कि इसका एक अच्छा सुराग यह देखना है कि यिर्मयाह की किताब में इस संज्ञा का इस्तेमाल कैसे किया गया है। बार-बार, उस किताब में तलवार का ज़िक्र किया गया है।

और यह उस दण्ड की ओर देख रहा है जिसे परमेश्वर बेबीलोनियों के माध्यम से लाने जा रहा है। और इसलिए, यह बेबीलोन की तलवार प्रतीत होती है। लेकिन यह तलवार जंगल में है, और परिणामस्वरूप हम अपनी जान जोखिम में डालकर रोटी प्राप्त करते हैं।

स्थिति यह थी कि शहरों में रहने वाले परिवारों के खेत शहरों के बाहर खुले रहते थे और उनकी फसलें उनके खेतों में होती थीं। लेकिन समस्या यह थी कि नए काम पर जाने वाले विदेशी सैनिकों की टुकड़ी द्वारा उन पर हमला किए जाने की संभावना थी।

और वे उन पर हमला कर सकते थे और उन्हें नुकसान पहुंचा सकते थे और साथ ही फसल भी ले सकते थे। और इसलिए वहाँ एक विशेष समस्या थी कि जंगल में तलवार के कारण शहरों के बाहर अपने खेतों में जाकर फसल काटने की कोशिश करना जोखिम भरा था।

और फिर श्लोक 9 और 10 एक साथ चलते प्रतीत होते हैं क्योंकि श्लोक 10 जो हुआ है, उस जोखिम का परिणाम प्रतीत होता है। वे जोखिम नहीं उठाना चाहते, इसलिए वे ऐसा नहीं करते। कौन खेतों में जाकर फसल उगाएगा, अगर आप वापस नहीं आ सकते, बल्कि मारे जा सकते हैं या शायद घायल हो सकते हैं? और इसलिए, यह श्लोक 10 में आता है।

और यहाँ एक अनिश्चित अनुवाद है जिस पर हमें गौर करना होगा। हमारी त्वचा अकाल की भीषण गर्मी से भट्टी की तरह काली हो गई है। और यह काला होने का सवाल है और यह भीषण गर्मी का सवाल है।

क्योंकि अगर हम न्यू इंटरनेशनल वर्जन को देखें, तो हमारी त्वचा भट्टी की तरह गर्म है, भूख से बुखार से ग्रस्त है। और यह बहुत अच्छी तरह से एक साथ जुड़ा हुआ है। काले रंग के लिए अनुवादित उस क्रिया के साथ एक बुनियादी समस्या यह है कि हिब्रू में समानार्थी शब्द हैं, जैसा कि अधिकांश भाषाओं में होता है।

अधिकांश विकसित भाषाएँ, जो अन्य भाषाओं और बोलने के पुराने तरीकों से तत्व ग्रहण करती हैं, उनमें समानार्थी शब्द होते हैं। इसलिए हम कुत्ते की भौंकने की आवाज़ के बारे में बात कर सकते हैं, और हम जानते हैं कि यह पेड़ की छाल से काफ़ी अलग है।

लेकिन हम यहाँ हैं, वे समानार्थी हैं लेकिन वे बिलकुल अलग शब्द हैं और उनका मतलब अलग-अलग है। और यह विशेष क्रिया, हाँ, इसका मतलब काला होना हो सकता है। और हाँ, यह जलने और काले जमा से ओवन के लिए उपयुक्त होगा।

हां, यह बिलकुल सही रहेगा। लेकिन इसके विपरीत, एक और क्रिया है जिसका अर्थ है गर्म होना। और इसे आम तौर पर पसंद किया जाता है।

और इसलिए, R9-RSV से भी ज़्यादा हाल ही में प्रकाशित NIV, वास्तव में, गर्मी के लिए जाने में हाल ही के अध्ययन का लाभ उठाता है। और इसलिए, हमारी त्वचा ओवन की तरह गर्म होती है। और यह गर्मी क्या है? खैर, यह शारीरिक रूप से आधारित है।

यह बुखार से है, भूख से बुखार। और यह चिलचिलाती गर्मी यहाँ बुखार का संदर्भ प्रतीत होती है। तो, ये आयतें आपस में कैसे जुड़ी हैं? खैर, किसान और उनके मददगार परिवार खतरे, सैन्य खतरे के कारण खेतों में नहीं जा रहे थे।

और इसलिए, वे शहरों में ही रह रहे थे। लेकिन वहाँ भोजन की कमी थी और अकाल था और कुपोषण था। और इसलिए, बीमारियाँ और रोग आ गए, और इस कुपोषण से उन्हें बुखार हो गया।

और इसलिए हम यहाँ हैं। ऐसा लगता है कि इस विशेष श्लोक में हमें इसी तरह आगे बढ़ना चाहिए। और हम इसे श्लोक 9 के परिणाम के रूप में देखते हैं। खैर, अब तक, खंड 8 से 10 में, यह सामान्य उत्पीड़न की बात है क्योंकि यह छोटा सा खंड श्लोक 8, श्लोक 9 और श्लोक 10 में हम और हमारे और हमारे द्वारा चिह्नित है।

लेकिन अब एक अंतर है। अब हम एक अलग उपखंड में चले गए हैं, विशेष रूप से उत्पीड़न के संबंध में, जहां कुछ समूह चिंतित थे। और हम पहले की सामान्यता को पीछे छोड़ देते हैं, हम, हमें, और हमारे, और हम फिर से उन विशिष्ट समूहों के बारे में सोचते हैं जो कब्जे के बाद की इस स्थिति में पीड़ित थे, विशेष दुर्व्यवहार जो कब्जे वाली ताकतों द्वारा किए गए थे और उन यहूदियों पर लगाए गए थे जिन्हें पीछे छोड़ दिया गया था और बेबीलोन में निर्वासित नहीं किया गया था।

और श्लोक 11 में, यौन अपराध सिर्फ यरूशलेम में ही नहीं बल्कि यहूदा के दूसरे शहरों में भी किए गए। सिथ्योन में महिलाओं के साथ बलात्कार किया जाता है और यहूदा के शहरों में कुँवारियों के साथ। दुख की बात है कि विदेशी सैनिकों द्वारा किसी क्षेत्र पर कब्ज़ा किए जाने के बाद अक्सर महिलाओं का यही हश्र होता है।

एनआईवी, थोड़ा और सामान्य लेकिन उसी निहितार्थ के साथ, सिथ्योन में महिलाओं का, यहूदा के शहरों में कुंवारी लड़कियों का शोषण किया गया है। खैर, मैं आपको याद दिला दूँ कि यह उसी बात की ओर इशारा करता है जिसके बारे में गुरु बात कर रहे थे और जो बात उन्हें खास तौर पर परेशान कर रही थी, आपको याद होगा, अध्याय 3 में उस छोटे से एकालाप के अंत में। मैं जो देखता हूँ, उससे मेरी आत्मा को दुख होता है क्योंकि मेरे शहर की सभी महिलाएं हैं। लेकिन अब, इस सामूहिक प्रार्थना में, उसका मतलब स्पष्ट हो गया है।

एनआरएसवी अपने क्रियापद बलात्कार के बारे में बहुत स्पष्ट है। और हिब्रू क्रियापद का अर्थ यही है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं कहता है। और इसलिए, जब एनआईवी उल्लंघन कहता है तो हम थोड़े बेहतर आधार पर हैं।

लेकिन यहाँ यौन दुर्व्यवहार, यौन हमला, का मतलब यही है। और NRSV गलत नहीं है, लेकिन शायद थोड़ा ज़्यादा सीधा है। और इसलिए हम यहाँ हैं।

यह एक भयानक अनुभव है। और एक बार फिर, जो पुरुष अपनी महिलाओं की रक्षा कर सकते थे, उनसे अपनी महिलाओं की रक्षा करने की उम्मीद की जाती थी, वे अब ऐसा नहीं कर सकते थे। और वे बस असहाय थे।

और इसलिए, एक पुरुष-प्रधान समाज में, यह एक समतावादी समाज की तुलना में और भी अधिक परेशानी भरा था, ऐसा कोई कह सकता है। और फिर, श्लोक 12 में, राजकुमारों को उनके हाथों से लटका दिया जाता है। बड़ों के प्रति कोई सम्मान नहीं दिखाया जाता।

और यहाँ हम हैं। पूर्व यहूदी नेताओं को अपमानित करने के लिए उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया है। यह फाँसी या मृत्युदंड का संदर्भ नहीं है, लेकिन उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया है, और उनके हाथ किसी संरचना, खंभे या पेड़ या किसी चीज़ से बाँध दिए गए हैं।

और वे वहाँ हैं। यह एक उदाहरण है। आपके उच्च और शक्तिशाली शासक, उन्हें देखो, उन्हें देखो।

लेकिन यह बहुत अपमानजनक है कि उन्हें इस तरह से फाँसी पर लटकाया जाता है। और ऐसा मज़ाक उड़ाने के लिए किया जाता है। आम तौर पर, बड़ों के प्रति कोई सम्मान नहीं दिखाया जाता।

शहर और कस्बे आम तौर पर बुजुर्गों की एक परिषद द्वारा शासित होते थे। और हर कोई उनका सम्मान करता था, न केवल इसलिए कि वे बुजुर्गों के प्रति सम्मान रखते थे, जो कि इज़राइल में सामाजिक संरचना का एक बहुत बड़ा हिस्सा था, बल्कि इसलिए भी कि वे नेता थे, और लोग उनकी बुद्धि, उनके अनुभव और शहरों में होने वाले मामलों के बारे में उनकी बुद्धिमानी भरी सरकार के लिए उनका सम्मान करते थे। और इसलिए, यहाँ फिर से, यह इनकार है, सामाजिक परंपराओं को तोड़ना है, और इस स्थिति में सब कुछ उल्टा हो गया है।

और फिर, श्लोक 13 में, इन सामाजिक शिकायतों में से एक और शिकायत है। युवा पुरुषों को महिलाओं का काम या यहाँ तक कि दासों का काम करने के लिए मजबूर किया जाता था, जहाँ पहले मामले में भोजन की बात आती थी। युवा पुरुषों को पीसने के लिए मजबूर किया जाता है।

और युवा पुरुष पीसते नहीं थे। युवा पुरुष कई अच्छे काम करते थे, लेकिन वे पीसते नहीं थे। पीसना आम तौर पर गृहिणियों के दैनिक कार्य को संदर्भित करता है जो अपने जौ या गेहूँ के दाने लेती हैं और उन्हें पत्थरों, पहिए जैसे पत्थरों के बीच पीसती हैं, हर सुबह उन दानों को आटे में बदल देती हैं ताकि उस दिन की रोटी बनाई जा सके।

हमारी रोज़ाना की रोटी, जैसा कि प्रभु की प्रार्थना में उल्लेख किया गया है, रोज़ाना की रोटी इसलिए बनाई गई क्योंकि इसे खाने में जल्दी ही बहुत ज़्यादा कठोरता आ जाती थी और बैक्टीरिया इस पर हमला कर सकते थे। इसलिए रोज़ाना की रोटी बनाई गई और गृहिणियों की यह भूमिका थी। और हम वास्तव में नए नियम के पाठ को देख सकते हैं और पा सकते हैं कि यह बात सामने आई है।

लूका 17 और आयत 35, यह एक विभाजन के बारे में बात करता है जो किया जाना है। दो महिलाएँ एक साथ आटा पीस रही होंगी। एक को ले लिया जाएगा और दूसरी को छोड़ दिया जाएगा।

दो महिलाएँ एक साथ आटा पीस रही हैं। हम इसे पुराने नियम के कई ग्रंथों में भी पाते हैं। 47 में, हमें बेबीलोन के खिलाफ़ न्याय की भविष्यवाणी मिलती है।

और बेबीलोन को एक रानी के रूप में चित्रित किया गया है, साम्राज्य की रानी के रूप में। लेकिन परमेश्वर की ओर से आदेश दिया गया है: चक्की के पाट लो और आटा पीस लो। चक्की के पाट लो और आटा पीस लो।

और यह बहुत ही गिरावट है, रानी के पद पर बैठे किसी व्यक्ति के लिए बहुत ही अपमानजनक है। और फिर, हम भी, हाँ, मुझे लगता है कि ये हमारे लिए देखने के लिए पर्याप्त श्लोक हैं। लेकिन यह गुलामों द्वारा भी किया जा सकता है।

अगर घर काफी बड़ा होता, तो घर में दास होते और अगर बड़े घर में पत्नी और पति उच्च पद पर होते तो उन्हें यह काम मिलता। और इसलिए, उदाहरण के लिए, हम निर्गमन 11 और पद 5 में पाते हैं, जब मूसा फिरौन और मिस्र के खिलाफ़ यह फैसला सुनाता है। मिस्र की भूमि में हर पहलौठा मर जाएगा, फिरौन के पहलौठे से लेकर जो उसके सिंहासन पर बैठता है, उस दासी के पहलौठे तक जो हाथ की चक्की के पीछे है।

और हम यहाँ हैं, कभी-कभी दास भी होते थे। लेकिन यह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो पुरुष करते थे। और युवा पुरुष इस विचार से बहुत घबरा जाते थे कि उन्हें रोटी बनाने के लिए इन अनाजों को पीसकर आटा बनाना चाहिए।

और इसलिए, इसे बहुत अपमानजनक माना जाता है। और इसलिए हर संस्कृति में सामाजिक परंपराएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। और फिर लड़के लकड़ियों के भार के नीचे लड़खड़ाते हैं।

हमने श्लोक 4 में लकड़ी का जिक्र किया था। हमें जो लकड़ी मिलती है, वह हमें खरीदनी पड़ती है। और हमें आग जलाने के लिए लकड़ी की ज़रूरत होती है ताकि खाना पकाया जा सके। और इसलिए वहाँ लकड़ियाँ बहुत थीं और लड़के जो इतने बड़े भार को उठाने के लिए वास्तव में इतने मज़बूत नहीं थे।

उन्हें अपनी शारीरिक क्षमता से परे इस भारी बोझ को उठाने के लिए मजबूर किया गया था। और इसलिए, यह फिर से शिकायत का विषय है। और इसलिए, हर तरह से, इस विदेशी शक्ति के खिलाफ यह शिकायत थी जो उन्हें इतना दुख और शिकायत दे रही थी।

फिर 14. बूढ़े लोग शहर के फाटक से बाहर चले गए, जवान लोग अपना संगीत छोड़ गए।

एनआईवी में भिन्नता। बुजुर्ग शहर के फाटक से चले गए हैं। युवाओं ने अपना संगीत बंद कर दिया है।

सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि शहर के गेट के अंदर, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, एक चौक होगा। यह एक सार्वजनिक चौक होगा जहाँ लोग इकट्ठा हो सकते हैं। बाज़ार के दिनों में, किसान अपनी उपज लेकर आते थे।

और शहर के गेट के अंदर ही बाज़ार होगा। और इसलिए यह कुल मिलाकर स्थिति है। लेकिन हमें उस गेट को थोड़ा और करीब से देखना होगा क्योंकि यह वास्तव में एक गेटहाउस था जिसके दोनों तरफ दीवारें थीं।

एक गेटहाउस जिसमें वास्तव में एक कमरा है जिसके दोनों छोर पर गेट हैं और इस गेटहाउस में सीटें उपलब्ध हैं। तो यही स्थिति है। लेकिन इस गेटहाउस में कौन बैठा था? NRSV में, यह बूढ़े लोग हैं।

इसका फ़ायदा यह है कि यह युवा पुरुषों के बिल्कुल विपरीत है। और इसलिए, यह काफी हद तक फिट बैठता है। लेकिन इसके विपरीत, मुझे लगता है कि नए अंतर्राष्ट्रीय संस्करण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

शहर के गेट से बुजुर्ग गायब हो गए हैं क्योंकि शहर का गेट ही वह जगह थी जहाँ बुजुर्गों की परिषद मिलती थी और वे दिन-प्रतिदिन शहर या कस्बे के मामलों पर चर्चा करते थे। और लोग आकर उनसे बात कर सकते थे और अपनी शिकायतों के बारे में बात कर सकते थे जिन्हें ठीक करने की ज़रूरत थी। और इसलिए, यह परिषद कक्ष था।

यह गेटहाउस परिषद कक्ष था। और हमें रूथ की पुस्तक में इसका एक उदाहरण मिलता है, जहाँ हम पाते हैं कि बोअज़ रूथ और उसकी सास के लिए छुटकारे के इस प्रश्न को सुलझाने की कोशिश करता है। और वह शहर के फाटक पर जाता है।

और वह वहाँ अपने निकटतम रिश्तेदार, इस रिश्तेदार के पास बैठा था। और ऐसा लगता है कि यह वह जगह है जहाँ बुजुर्ग मिलते होंगे। और वह उसे वहाँ पाता है।

ठीक है। और इसलिए, बड़ों, यह यहाँ सही अनुवाद लगता है। क्योंकि वे अब और कार्य नहीं कर रहे थे।

वे अधिकारी नहीं थे। वे अपनी नौकरी खो चुके थे। वे ऐसे लोग थे जिन्हें फाँसी दी जा रही थी, ये शहर और नगर के नेता।

और उन्होंने अपनी नागरिक शक्ति खो दी थी। और फिर से, इन लोगों के प्रति बहुत अनादर दिखाया जाता है। लेकिन इसके खिलाफ़, युवाओं ने अपना संगीत छोड़ दिया है।

इस सार्वजनिक चौक पर, युवा पुरुषों के लिए एक साथ आकर मनोरंजन के लिए संगीत बनाने का अवसर, खुद का मनोरंजन करना और शहर के गेट से सटे उस चौक पर मौजूद लोगों का मनोरंजन करना। और वे अब संगीत नहीं बना रहे थे। खैर, ये युवा पुरुष क्या कर रहे थे? खैर, हमें अभी-अभी बताया गया है।

वे मेहनत कर रहे थे। उन्हें काम दिया गया था। और जीवन में सिर्फ़ काम था, मौज-मस्ती नहीं।

और वे कड़ी मेहनत करते थे, जैसा कि श्लोक 13 में बताया गया है। और उन्हें कोई छुट्टी नहीं मिलती थी, कोई छुट्टी नहीं। इसलिए, घंटों के बाद, अपने काम के दिन के बाद, युवा लोग आते और इकट्ठा होते और संगीत बजाते।

आप इसकी कल्पना बहुत आसानी से कर सकते हैं। लेकिन अब यह बंद हो गया है क्योंकि इसके लिए समय नहीं था। काम किया जाना था, ऐसा कब्जे वाले अधिकारियों ने कहा।

और इस तरह, यह सामान्य प्रथा बंद हो गई थी। और फिर श्लोक 15 में, हम फिर से एक सामान्यीकरण पर आते हैं। और आपको सामान्य दुःख का उल्लेख मिलता है।

और 15 और 16 वीं आयत की पहली पंक्ति एक साथ चलती है। हमारे दिलों का आनंद समाप्त हो गया है। हमारा नाचना शोक में बदल गया है।

हमारे सिर से ताज गिर गया है। और मनोरंजन और खुशी से मिलने वाले युवा पुरुषों की वह अभिव्यक्ति और संगीत बनाना अब सामान्यीकृत हो गया है, यह कहते हुए कि, ठीक है, हमारी वर्तमान स्थिति में अब कोई भी खुश नहीं है। और इस बिंदु पर दुःख का यह सामान्यीकरण है।

इस खंड में अब तक शिकायत रही है, लेकिन अब सकारात्मक शोक है। हमारे दिलों की खुशी खत्म हो गई है। हमारा नाचना शोक में बदल गया है।

हमारे सिर से ताज गिर गया है। और इसलिए, यह दुख की अभिव्यक्ति एक उलटफेर है। एक तरह से, वे सभी शिकायतें उलटफेर थीं, लेकिन बहुत हद तक शिकायत के विचार के साथ।

लेकिन अब, ज़्यादा ख़ास तौर पर, मन में दुख है। और हम एक भजन, धन्यवाद के भजन, भजन 30 की तुलना कर सकते हैं, जहाँ भजनकार बात कर रहा है। उसके पास एक संकट था, लेकिन उसने संकट को परमेश्वर के सामने लाया।

और संकट से निपटा जा चुका है, और वह धन्यवाद के गीत के साथ वापस आता है। और वह अपना धन्यवाद-बलि चढ़ाने और परमेश्वर की आराधना करने तथा परमेश्वर ने जो कुछ किया है उसके लिए उसकी स्तुति करने के लिए तैयार है। और इसका सारांश अध्याय 30 की आयत 11 में इस प्रकार दिया गया है।

तूने मेरे शोक को नृत्य में बदल दिया है। तूने मेरा टाट उतार दिया है और मुझे खुशी के कपड़े पहना दिए हैं। यह एक और मामला है जहाँ भजन, न केवल अंतिम संस्कार के विलाप, बल्कि भजन उनके विशेष संकट के संबंध में शोक व्यवहार और शोक रीति-रिवाजों की बात कर सकते हैं।

आपने मेरे शोक को नृत्य में बदल दिया है, मेरा टाट उतार दिया है, और मुझे खुशी के कपड़े पहना दिए हैं। और वह भगवान का शुक्रगुजार है, और वह कहता है, यह आप ही हैं, भगवान, जिन्होंने मुझे इस संकट से बचाया है, और मैं बहुत आभारी हूँ। लेकिन यहाँ पर हमें उल्टा देखने को मिलता है।

हमारे दिलों की खुशी खत्म हो गई है। हमारा नाचना-गाना मातम में बदल गया है। और फिर हमारे सिर से ताज गिर गया है।

खैर, कुछ टिप्पणीकार कहते हैं, ओह, ताज? खैर, यह शाही लगता है, और हमारे पास पहले भी शाही संदर्भ हैं। नुकसान का एक हिस्सा डेविडिक राजशाही की परंपरा है, और अब यह खत्म हो गया है। और इसलिए यह फिट होगा।

लेकिन, बेशक, हमें तत्काल संदर्भ को देखना होगा। और यहाँ मुकुट का प्रयोग अलग तरीके से किया गया है। यह शब्द शाही मुकुट से कहीं अधिक व्यापक है।

और कभी-कभी इसका मतलब उत्सव के प्रतीक के रूप में फूलों और पत्तियों की माला से भी हो सकता है। और इसका एक उदाहरण यशायाह की पुस्तक, यशायाह 28 में है, जहाँ भविष्यवक्ता उत्तरी राज्य के नेताओं के खिलाफ बोल रहा है। और वह कह रहा है कि वहाँ कुशासन है।

और इस कुशासन का एक हिस्सा यह है कि वे अपना समय उपद्रवी पार्टियों में बिताते हैं और नशे में धुत हो जाते हैं। और वे ये मालाएँ पहनते हैं। और इसाईयाह जो बात कहता है वह यह है कि ये मालाएँ इस बात का संकेत हैं कि उनकी पार्टी खत्म होने वाली है।

आह, एप्रैम के शराबियों की गर्वित माला और उसकी शानदार सुंदरता का मुरझाता हुआ फूल, जो उन लोगों के सिर पर है जो भरपूर भोजन से फूले हुए हैं, जो शराब के नशे में चूर हैं। देखो, प्रभु के पास एक शक्तिशाली और मजबूत है। और इसलिए, पद 3 और 4, पैरों तले रौंद दिए जाएंगे, एप्रैम के शराबियों की गर्वित माला और उसकी शानदार सुंदरता का मुरझाता हुआ फूल।

और इसलिए, यह यहाँ है। ऐसा लगता है कि यहाँ संदर्भ यही है। और इसलिए, वह माला जो उत्सव के साथ चली गई, पार्टी करने और मासूमियत से खुशियाँ मनाने के साथ चली गई, और एक अच्छे अर्थ में, यह हमारे सिर से गिर गई।

माला गिर गई है। यह इस बात को दर्शाने का एक शानदार तरीका है कि कैसे हमारे दिलों की खुशी खत्म हो गई है, और हमारा नाचना शोक में बदल गया है। लेकिन फिर, उस आखिरी पंक्ति में, पद 16 की आखिरी आधी पंक्ति में, शिकायत और दुख से अपराधबोध की ओर एक मोड़ आता है।

हम श्लोक 7 की इस पंक्ति पर वापस आते हैं, लेकिन अब इसे अलग तरीके से व्यक्त किया गया है: हाय हम पर जिन्होंने पाप किया है। और यह अपराधबोध जो सामने आता है, वह गुरु द्वारा कही गई बात की बहुत याद दिलाता है: उन्हें परमेश्वर के सामने अपने अपराध को स्वीकार करना चाहिए।

वे इन चरम बिन्दुओं पर ऐसा करते हैं, श्लोक 7 और श्लोक 16 में। और यहाँ जो कहा जा रहा है, वह यह है कि यह सभी दुखों का मूल कारण है। हमारी समस्या केवल विदेशी कब्ज़ा नहीं है।

यह केवल मानवीय समस्या नहीं है, बल्कि हमें इसके पीछे देखना चाहिए और इसे यहूदा के पाप के लिए यहोवा की सज़ा के रूप में देखना चाहिए। यहाँ ईश्वरीय प्रावधान है, और हम इसका कारण जानते हैं। और इसका कारण हम में है, हमारे अपने जीवन में।

और इसलिए, यह बहुत ही चौंकाने वाला है, यहाँ अपराधबोध का यह अंतिम संदर्भ - हम पर धिक्कार है। हाँ, हम पीड़ित हैं, लेकिन उस पीड़ा का मूल कारण हमारी अपनी गलती है।

हमने पाप किया है, इसलिए इसकी जिम्मेदारी हम पर है। इसलिए, इन सभी शिकायतों और दुखों के अंत में यह स्पष्ट स्वीकारोक्ति है। हम इस सब की नींव पर आ गए हैं, और यह एक दिव्य नींव है, और यह ईश्वर के साथ उनके रिश्ते का सवाल है।

और इसलिए, यहाँ संदेश यह है कि मण्डली ने समझ लिया है कि गुरु उन्हें क्या बता रहे थे। युद्ध के बाद की स्थिति के लिए उचित प्रतिक्रिया घेराबंदी की स्थिति के लिए उचित प्रतिक्रिया के रूप में केवल शिकायत और दुःख नहीं है, बल्कि अपराध भी है। और यहाँ स्वीकारोक्ति का यह पश्चातापपूर्ण तत्व है कि मण्डली इस बिंदु पर जिम्मेदारी ले रही है।

और यह सुनना गुरु के लिए अद्भुत रहा होगा क्योंकि हम इस तबाही, इस पूरी आपदा की व्याख्या के मामले पर वापस आ रहे हैं। यह पूरी किताब में चलता है, और गुरु ने 1:5 और 1:8 में इस तरह की व्याख्या की थी, और फिर सिय्योन ने इस रोना, इस आरोप को उठाया था जो 1:18

और 1:20 में सच माना जाता है। सिय्योन 2:14 में फिर से इस पर वापस आया था, और फिर हमें अध्याय 3 और श्लोक 40 से 42 में पश्चाताप करने के लिए गुरु का आह्वान मिलता है। और इसलिए, जब हम किताब में देखते हैं, तो हम देखते हैं कि यह वास्तव में एक चरमोत्कर्ष है।

अध्याय 4 में भी, हमें पूरे अध्याय में भयावह व्याख्या के ये नोट मिलते हैं। श्लोक 6 में कहा गया है कि मेरे लोगों की सज़ा, गुरु कहते हैं, सदोम की सज़ा से भी बड़ी है। इसका मतलब यह है कि दोनों मामलों में यहोवा जिम्मेदार है।

और हमारे पास अध्याय 4 की आयत 13 है: यह उसके भविष्यवक्ताओं के पापों और पुजारियों के अधर्म के कारण था कि यह सब समुदाय पर पड़ा। और अंत में, आयत 22 में भविष्य के लिए आशा की अभिव्यक्ति में दंड का संदर्भ है, दंड खत्म, दंड खत्म। लेकिन ऐसा होने के लिए, सुनने वाले मण्डली को अच्छी तरह से पता है कि उन्हें अपना काम करना होगा, और उन्हें उस पाप को स्वीकार करना होगा जो उस दंड का आधार है।

और वे छंद 6 और 7 में उस अंतर-पीढ़ीगत तरीके से ऐसा करते हैं, और अब सीधे तौर पर जहाँ तक हमारा सवाल है, यह स्पष्ट स्वीकारोक्ति, हम पर हाय, क्योंकि हमने पाप किया है। अगली बार, हम विलापगीत 5 के अंतिम छंद, छंद 17 से 22 को देखेंगे। यह डॉ. लेस्ली एलन विलापगीत की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में हैं। यह सत्र 13,

विलापगीत 5 :8-16
है।